अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

जैनागम स्तोक वारिधि –छठी कक्षा (11 जनवरी, 2015)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) ....

(शब्दों में) ....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या : [ ]

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए– **10x1=(10)**

(a) शिल्प स्थावर का स्वभाव है –

क. शीतलता ख. उष्ण

ग. बाजना घ. कठोर ( )

(b) मनुष्य की कुल कोडी है –

क. 53 लाख ख. 2 लाख

ग. 26 लाख घ. 12 लाख ( )

(c) एकेन्द्रिय की भाव दिशाएँ हैं –

क. 08 ख. 06

ग. 10 घ. 18 ( )

(d) भवनपति देव और देवियाँ सबसे थोड़े हैं –

क. पूर्व–पश्चिम दिशा में ख. उत्तर दिशा में

ग. दक्षिण दिशा में घ. नीची दिशा में ( )

(e) सातवीं नरक का जघन्य विरह है –

क. 6 माह ख. 4 माह

ग. अन्तर्मुहूर्त घ. 1 समय ( )

(f) विरह द्वार का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र के पद के आधार से है –

क. तीसरे पद के ख. 18वें पद के

ग. 15वें पद के घ. छठे पद के ( )

(g) 98 बोल के बासठिये में सम्मुर्च्छिम मनुष्य का बोल है –

क. 31वाँ ख. 24वाँ

ग. 23वाँ घ. 25वाँ ( )

(h) थलचर पुरुष में योग पाये जाते हैं –

क. 15 ख. 11

ग. 10 घ. 13 ( )

(i) चौरेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट बंध करता है –

क. 50 सागर ख. 100 सागर

ग. 1000 सागर घ. 70 कोटा कोटी सागर ( )

(j) समुच्चय जीव चक्षुदर्शनावरणीय कर्म प्रकृति की जघन्य स्थिति बाँधता है –

क. 30 कोटा कोटी सागरोपम ख. 3,000 वर्ष

ग. अन्तर्मुहूर्त घ. 1 समय ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ अथवा नहीं में लिखिए– **10x1=(10)**

(a) वनस्पतिकाय के जीवों में 3 उपयोग पाये जाते हैं। ....

(b) छद्मस्थ जीव का 94वाँ बोल है। ....

(c) 98 बोल में 97वाँ बोल 14वें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा है। ....

(d) 98 बोल में 54,60,72 और 73 ये चारों निगोदिया जीवों के औदारिक शरीर की अपेक्षा है। ....

(e) अभव्य जीव में कृष्ण, नील, कापोत ये तीन लेश्या पायी जाती हैं। ....

(f) अगले भव की आयु बन्धते ही उसका प्रदेशोदय चालू हो जाता है। ....

(g) एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक मिश्र मोहनीय का उदय नहीं होता है। ....

(h) साम्परायिक साता वेदनीय की समुच्चय जीव की अपेक्षा जघन्य 8 मुहूर्त स्थिति है। ....

(i) परिवर्तमान मध्यम परिणाम (घोलमान परिणाम) में आयु का बंध होता है। ....

(j) 40 कोटा कोटी सागर का बंध होने पर 4,000 वर्ष का अबाधाकाल होता है। ....

प्र.3 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम सें नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए– **10x1=(10)**

(a)	5 निद्रा	(क) 1 सागर का 3/14 भाग	....
(b)	सातावेदनीय	(ख) 1 सागर के 2/7 भाग	....
(c)	संज्वलन क्रोध	(ग) 1 सागर के 9/35 भाग	....
(d)	नपुंसक वेद	(घ) 1 सागर के 5/28 भाग	....
(e)	मिथ्यात्व मोहनीय	(च) 1 सागर के 3/7 भाग	....
(f)	सूक्ष्म त्रिक	(छ) 1 सागर के 7/28 भाग	....
(g)	शुभ विहायोगति	(ज) 1 सागर के 4/7 भाग	....
(h)	पीला वर्ण	(झ) 1 सागर के 7/35 भाग	....
(i)	नाराच संहनन	(य) 1 सागर के 1/7 भाग	....
(j)	कड़वा रस	(र) 1 सागर	....

प्र.4 मुझे पहचानो – **10x2=(20)**

(a) 98 बोल में से मेरा ही बोल ऐसा है, जिसमें 4 योग पाये जाते हैं। ....

(b) मैं 75वाँ बोल हूँ और अभव्य जीवों से अनन्त गुणा हूँ। ....

(c) मैं जीवन में एक ही बार बँधता हूँ। ....

(d) कर्मों की स्थिति का अपवर्तन होने पर मेरा भी अपवर्तन हो जाता है। ....

(e) क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि 66 सागरोपम झाझेरी तक निरन्तर मेरा वेदन करता है। ....

(f) मुझे छोड़कर कोई भी जीव आयुष्य कर्म का बन्ध किये बिना मरण को प्राप्त नहीं होता है। ....

(g) मुझमें चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण के विरह का उल्लेख मिलता है।............................

(h) मेरा उत्कृष्ट विरह 45 अहोरात्रि है। ....

(i) विकलेन्द्रिय जीवों में अपर्याप्त अवस्था का अन्तर्मुहूर्त बड़ा होता है तथा मेरा अन्तर्मुहूर्त छोटा होता है। ....

(j) उत्तर दिशा में हमारे 3,66,00,000 भवन हैं। ....

प्र.5 एक–दो पंक्ति में उत्तर दीजिए – **9x2=(18)**

(a) 64 इन्द्रों के विरह का उल्लेख लिखिए।

....

....

(b) पृथ्वीकाय व अप्काय जीवों का संस्थान व स्थिति लिखिए।

....

....

(c) कुल किसे कहते हैं? समझाइए।

....

....

(d) पहली नारकी से सातवीं नारकी तक किस नारकी के नैरिये थोड़े हैं और किसके अधिक हैं?

....

....

....

(e) द्रव्य दिशा के अठारह भेद लिखिए।

....

....

....

(f) सात कर्मों की उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध के लिए कैसे परिणाम चाहिए?

....

....

....

(g) एकेन्द्रिय जीव में पाये जाने वाले योग लिखिए।

....

....

....

(h) सकषायी, छद्मस्थ, सयोगी तथा संसारी जीवों में गुणस्थान लिखिए।

....

....

....

(i) स्त्रीवेद को विकलेन्द्रिय जीव उत्कृष्ट कितना बाँधते हैं?

....

....

....

प्र.6 तीन –चार पंक्ति में उत्तर दीजिए – (कोई आठ) **8x4=(32)**

(a) तेउकाय का स्वभाव, वर्ण, संस्थान, भव, स्थिति, योनि व कुल कोड़ी लिखिए।

....

....

....

....

....

(b) चौथे देवलोक के देवता किस दिशा में थोड़े हैं तथा किस दिशा में अधिक हैं?

....

....

....

....

....

....

(c) बलदेव का जघन्य विरह 2,52,000 वर्ष किस प्रकार होता है?

....

....

....

....

....

(d) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत क्यों नहीं हो सकते हैं?

....

....

....

....

....

(e) असन्नी पंचेन्द्रिय जीव चारों आयु की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी बाँधता है तथा उनका अबाधाकाल कितना होता है?

....

....

....

....

....

(f) हास्य मोहनीय, मनुष्यगति, यशकीर्ति को समुच्चय जीव जघन्य व उत्कृष्ट कितना बाँधेंगे?

....

....

....

....

....

(g) पहली नरक में जीव के 3 भेद लेने का कारण लिखिए।

....

....

....

....

....

(h) 98 बोलों में से 45वें बोल से 53वें बोल तक की अल्पबहुत्व व बासठिया लिखिए।

....

....

....

....

....

(i) 98 बोलों में से 77वें बोल से 82वें बोल तक की अल्पबहुत्व व बासठिया लिखिए।

....

....

....

....

....